AD EDUXIAN JOURNAL
(A Quarterly Multidisciplinary Blind Peer Reviewed & Refereed International Journal)
www.educarepublication.com
E-ISSN: 3048-9751
Volume-1, Issue-2, October 2024

पूर्व मध्यकालीन भारत में स्त्रियों की दशा

डॉ० अलीम अख्तर खाँ[1]

समाज में स्त्रियों के प्रति उस समाज की मनोधारणा का सामाजिक महत्व होता है। किसी भी सभ्यता के विकसित स्वरूप को समझने तथा उसकी सीमाओं का मूल्यांकन करने का सर्वोत्तम उपाय यह है कि तत्कालीन समाज में स्त्रियों की स्थिति का अध्ययन किया जाय।[1]

भारतीय समाज में क्रमश: होने वाले राजनैतिक परिवर्तन के फलस्वरूप स्त्रियों की स्थिति में भी परिवर्तन हुआ। वैदिक काल में स्त्रियों की स्थिति सम्मान जनक थी। वह प्रत्येक सामाजिक, धार्मिक एवं बौद्धिक क्षेत्र में भाग लेती थी।[2] वैदिक साहित्य में नारी को देवी के रूप में प्रस्तुत किया गया।[3] परिवर्ती युग यद्यपि नारी जीवन में कुछ गिरावट आई किन्तु उनका सामाजिक जीवन अधिक स्वतंत्र था।[4] हिन्दू काल में स्त्रियों की स्थिति मुस्लिम कल की अपेक्षा अच्छी थी।[5] मुस्लिम युग में स्त्रियों की स्थिति में निरंतर गिरावट आती गई। समकालीन विवरण से ज्ञात होता है कि समाज में पर्दा प्रथा प्रचलित थी। पुत्री के रूप में उसे पिता, स्त्री के रूप में पति तथा विधवा हो जाने पर बड़े पुत्र के संरक्षण में जीवन यापन करना पड़ता था। समाज में प्रचलित बाल- हत्या,, बहु विवाह, सती प्रथा, दहेज प्रथा तथा पर्दे की प्रथा का प्रचलन था। मुस्लिम आक्रामकों के अमानवीय कृत्यों के भय के फलस्वरूप हिन्दू समाज में जौहर जैसी प्रथा का भी प्रचलन हो गया था। जिसने नारी जीवन को अत्यंत दयनीय बना दिया था।[6] मुस्लिम समाज स्त्रियों को स्वतन्त्रता प्रदान करने के पक्ष में नही था।[7] मुस्लिम समाज में बाल-विवाह, बहुविवाह तथा तलाक की प्रथा का प्रचलन था।

हिन्दू और मुस्लिम दोनों की परिवारों में कन्या जन्म को अप्रसन्नता की दृष्टि से देखा जाता था। अमीर खुसरो लड़की पैदा होने पर दु:ख प्रकट करता है तथा उसे पर्दे में रहने की सलाह देता है।[8] लड़की परिवार के लिए अनचाहा मेहमान समझी जाती थी।[9] राजपूत परिवार में उस माता को हेय की दृष्टि से देखा जाता था। जिसके गर्भ से लड़की उत्पन्न होती थी। प्रसव

[1]. भुतपूर्व शोधकर्ता, दीन दयाल उपाध्याय विश्वविद्यालय, गोरखपुर, उत्तरप्रदेश| मोबाईल: 8299822641 ईमेल: alim14081991@gmail.com.

काल में न उसकी समुचित देखभाल की जाती थी और न ही नवजात शिशु का सत्कार किया जाता था।[10] मध्यकाल से पूर्व बाल हत्या का प्रचलन नहीं था।[11] आलोच्य काल में इसका उल्लेख मिलता है। हिन्दू मुख्यता राजपूत[12] प्राय: जन्म लेते ही कन्या को अफीम आदि खिलाकर मार डालते थे।[13] दहेज प्रथा का प्रचलन राजपूतों में अधिक था। राजपूत विवाह का खर्च उठाने में असमर्थ होने के कारण अपनी कन्याओं को जन्म लेते ही मौत की नींद सुला देते थे। कर्नल टाड ने सविस्तार कन्या शिशु हत्या के कारणो का उल्लेख किया हैं।[14] सल्तनत काल के हिन्दू परिवारों में बाल विवाह का प्रचलन था। माता-पिता अपनी कन्याओं को विवाह बाल्यावस्था में सम्पन्न कर अपने को भाग्यशाली समझते थे। बंगाल में 9 वर्ष की उम्र में लड़कियों की शादी कर दी जाती थी।[15] कभी-कभी समाज में दहेज से छुटकारा पाने हेतु माता-पिता लड़कियों का अपहरण कर लेते थे। इस भय से भी हिन्दू माता-पिता अपनी लड़कियों का शादी पाँच या छ: वर्ष में कर देते थे।[16] बाल विवाह के प्रचलन में मुस्लिम सैनिकों के आतंक पूर्ण कार्य ने अधिक योगदान दिया। मुस्लिम सैनिक प्राय: अविवाहित लड़कियों को विवाह कम उम्र में ही सम्पन्न कर भावी आपदाओं से छुटकारा पा जाते थे।[17] मुस्लिम समाज में भी बाल विवाह का उल्लेख मिलता है विवाह के समय राजकुमार खिज्रखान की उम्र 10 वर्ष तथा देवल रानी की उम्र 8 वर्ष थीं।[18] सुल्तान फिरोज तुगलक के शासनकाल में अमीर अपनी पुत्रियों की शादी अल्पावस्था में कर देते थे। पुत्रियों की शादी के लिए राजकोष से धन प्राप्त होता था।[19]

दहेज प्रथा- मध्य युग में दहेज प्रथा का व्यवस्थित उल्लेख मिलता।[20] दहेज के अभाव में लड़कियों का विवाह एक कठिन समस्या थी। राजस्थान में इसका प्रचलन विशेष रूप से था।[21] कर्नल टाड ने दहेज प्रथा का वर्णन किया है। दहेज के कारण बहुत सी राजपूत कन्याओं ने विष खाकर अपने जीवन को समाप्त कर दिया।[22] बंगाल में दहेज प्रथा का प्रचलित स्वरूप इतना कठिन था कि कन्या के पिता को कभी-कभी दहेज के रूप में कन्या की बहन को भी समर्पित करना पड़ता था।[23] पिता को दहेज के अभाव में योग्य वर की उपेक्षा कर देनी पड़ती थी।[24]

AD EDUXIAN JOURNAL
(A Quarterly Multidisciplinary Blind Peer Reviewed & Refereed International Journal)
www.educarepublication.com
E-ISSN: 3048-9751
Volume-1, Issue-2, October 2024

बहुविवाह- कुलीन वर्ग एक से अधिक विवाह करने में आगे थे। राजपुर लोग बहु विवाह के पक्ष में अधिक थे। कर्नल राड ने लिखा है कि सप्ताह में जितने दिन होते उतनी रानियाँ रखनी राजपूतों में असामान्य बात नहीं थी।[25] मुस्लिम समाज में में बहु विवाह का प्रचलन अधिक था। उनका धर्म ग्रंथ कुरान भी उन्हें 4 विवाह करने की अनुमति प्रदान करता है।[26] शासकों द्वारा मुख्य पत्नियों के अतिरिक्त उप पत्नियों तथा रखैलों को रखने की कोई निश्चित नियम नहीं था।[27] मुबारक शाह खिलजी से सत्ता हड़पने के बाद खुसरों खाँ ने उसकी पत्नियों पर अधिकार कर विवाह कर लिया था।[28] इसी प्रकार इब्नबतूता ने अपने जीवन काल में 4 विवाह किया था।[29] अलाउद्दीन खिलजी ने गुजरात के राजा करण देवी की पत्नी कमला देवी को अपनी रानी बना लिया था।[30] सल्तनत काल में मुस्लिम शासकों की पत्नियों एवं रखैलों की संख्या अधिक थी उनके रहने के लिए अलग से हरम की व्यवस्था कि गई थी।

सती प्रथा- प्राचीन हिन्दू समाज में सती प्रथा के प्रचलन का उल्लेख मिलता है।[31] पति के मृत्यु के पश्चात हिन्दू स्त्री अपने पति के शव के साथ चिता पर जलकर अपनी जीवन समाप्त कर देती थी। पति के शव के साथ पत्नी के जीवित जलने की प्रक्रिया को सती प्रथा कहा जाता था। भारत में इस प्रथा का प्रचलन सिथियन जातियों द्वारा आने पर हुआ। इनमें सती प्रथा का पालन किया जाता था। जिसे सहज ही में आर्यों द्वारा अपना ली गई।[32] भारत में इसका प्रचलन मुख्यता ऊंची जातियों में था।[33] तेरहवीं सदी के पश्चात सती प्रथा का व्यापक रूप में प्रसार हुआ। 14वीं शताब्दी का अरब यात्री इब्नबतूता ने सती प्रथा के हृदय विदारक दृश्य आंखो देखा विवरण प्रस्तुत किया है। उसके अनुसार जब वह अजमेर में नियुक्त था तो वहाँ सात काफिर हिन्दू मारे गए। इनमें तीन की पत्नियाँ थी। उन्होंने अपने को अग्नि में जला डालने का निश्चय किया। पति के मृत्यु का समाचार पाकर वे खूब गाती-बजाती रही, फिर स्नान कर सुगंधित द्रव्यों का सेवन कर बहुमूल्य वस्त्रों के साथ सती होने के लिए तैयार हुई। वे दाहिने हाथ में नारियल तथा बाये हाथ में दर्पण लिए घोड़े पर बैठ गई। शीघ्र ही एक जुलूस तैयार हो गया जिसमें लोग आगे-आगे तुरही, नक्कारे तथा बिगुल बजाते हुए चल रहे थे। जुलूस एक सरोवर पर पहुंचा जहां झाड़ियाँ एवं गुंबद बने थे। स्त्रियों ने सरोवर में स्नान किया तत्पश्चात अपने आभूषण एवं वस्त्र दानकर दिये और मोटी साड़ी धारण की। मानसरोवर के नीचे अग्नि प्रज्जवलित की गई इस पर सरसों का तेल छोड़ा गया।

उस चिता के पास आकर जहां पहले से आग के सामने रज़ाई लगा दी गई। स्त्रियों ने कहा तुम मुझे आगे से डरते हो। तत्पश्चात अदम्य साहस से अभिवादन कर अपने को चिता में दाल दिया। उपस्थित लोग जो लकड़ियों की टुकड़ी लिए हुए थे। चिता पार दाल दिया तथा शोर करने लगे। इसके साथ ही नगाड़े बज उठे विवरणकर्ता वहाँ उपस्थित था यह दृश्य देखकर वह बेहोश हो गया।[34]

कभी-कभी पति के शव बिना भी सतीत्व व्रत का पालन किया जाता था। इसे अनुसरण कहा जाता था। 'सहमरण' में विधवा अपने पति के शव के साथ-साथ चिता पर जल जाती थी।[35] इब्नबतूता एवं अन्य इतिहासकारों ने सहमरण का उल्लेख किया है। गर्भवती विधवाएँ प्राय: शिशु को जन्म देने के पश्चात सती धर्म का पालन करती थी। राजा रतनसेन की पत्नियाँ नागमति और पद्मावत ने पति के मृत्यु के पश्चात जीवन भर के वैमनस्य त्याग कर एक एक ही चिता पर सती हो गई।[36] बंगाल में भी सती प्रथा का प्रचलन था। सहज में भयभीत होने वाली बंगाली स्त्रियाँ अग्नि में कूद पड़ती थी।[37] सल्तनत काल में मुहम्मद बिन तुगलक के पूर्व के किसी सुल्तान ने इसको रोकने का प्रयास नहीं किया। मुहम्मद तुगलक के काल में सती होने के लिए राज्य से अनुमति लेनी पड़ती थी।[38] हिन्दू समाज में इस प्रथा को प्रोत्साहित करने में पति-पत्नी के बीच पारलौकिक जीवन के पवित्र धार्मिक सिद्धान्त ने काफी योगदान दिया।[39] सती व्रत का पालन करने वाली स्त्री के परिवार को समाज में बड़ी ख्याति मिलती थी।[40]

जौहर- युद्ध में पराजय के भय से से समस्त परिवार को जीवित जल देने की प्रक्रिया को जौहर[41] कहा जाता है।[42] ईसा की सातवीं सदी से लेकर मध्यकाल तक मुगलों तथा पठानों द्वारा राजपूतों का भयावह विध्वंश हुआ। इसके फलस्वरूप जो प्रथा समाज में प्रचलित हुई वह कालांतर तक निर्जीव न हो सकीं। जौहर भी इन्हीं वाह्य आक्रमणों के परिमाणस्वरूप अंकुरित एक सामाजिक प्रथा था जो राजस्थान में विशेष रूप से प्रचलित हुई।[43] जौहर प्रथा का उल्लेख समकालीन मुस्लिम और हिन्दू स्त्रोत ग्रन्थों में प्राप्य है। भारत में मुस्लिम शासन की स्थापना के पश्चात सर्वप्रथम जौहर व्रत का पालन 1286 ई॰ में बलवन के जैसमेलर आक्रमण के समय किया गया था। इस युद्ध में विशाल संख्या में राजपूत नारियों ने अग्नि का आलिंगन किया तथा 2800 राजपूतों नारियों ने अग्नि का आलिंगन किया तथा

2800 राजपूत महिलाओं ने अपने प्राणों की आहुति दे दी।[44] खजाइनुलफ़ुतूह के लेखक अमीर खुसरों लिखते हैं कि 1301 ई॰ में अलाउद्दीन ने रथम्भौर का घेरा दाल दिया। किले के भीतर खाद्य सामग्री की कमी हो गई। विजय की कोई आशा न दिखने पर जौहर का वीरतापूर्ण कार्य सम्पन्न किया गया।

तुगलक शासन काल में कंपिला के राजा द्वारा जौहर स्पष्ट है। वहीउद्दीन गश्तस्प नामक एक विद्रोही को राजा द्वारा शरण दिये जाने के कारण सुल्तान मुहम्मद तुगलक ने कंपिला पर आक्रमण कर दिया। राजा ने अपने संबंधियों को संबोधित करते हुए कहा- 'मैंने मृत्यु का आलिंगन करने का निश्चय किया है और तुम लोगों से जो चाहे वह मेरा अनुसरण करें।' सम्राट बाबर द्वारा चंदेरी पर आक्रमण क्जे समय मेदिनी राय द्वारा जौहर के जिस रूप का अनुसरण किया गया वह जौहर इतिहास में अत्यंत हृदयविदारक एवं भयावह था।[45] विजय की निराशा में मेदिनी राय ने समस्त परिवार के स्त्री-बच्चों को मार डाला तथा तत्पश्चात राजपूतों ने एक-दूसरे के तलवार से आत्महत्या कर ली। यह प्रथा केवल राजपूतों तक ही नहीं सीमित थी। इसका प्रभाव मुस्लिम समाज पर भी पड़ा। तैमूर के भटनेर विजय के समय उसके सैनिकों के भय से मुस्लिम स्त्रियों ने भी जौहर का पालन किया था।[46] कर्नल टाड ने इसकी समीक्षा करते हुए लिखा है कि राजपूत बालाओं के इस साहसिक कदम ने भविष्य में अक्रांतों द्वारा किए जाने वाले अमानवीय कृत्यों को कम करने में औषधि का कार्य किया।[47]

पर्दा प्रथा- मध्ययुग में स्त्रियों की सामाजिक एवं धार्मिक जीवन की स्वतन्त्रता को बाधित करने में पर्दा प्रथा का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। प्राचीन काल में पर्दा का प्रचलन समाज में नहीं था।[48] स्त्रियाँ प्राय: पुरुषों से पृथक्कता का पालन करती थी तथा बाहर निकलते समय घूँघट कर लेती थी।[49] किन्तु पर्दा के जिस स्वरूप का प्रचलन मुस्लिम काल में हुआ वह इस्लाम के प्रभाव का परिणाम था।[50] मुस्लिम सैनिकों के आतंकपूर्ण कार्य के भय ने इस प्रथा को प्रोत्साहित करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।[51] 14-15 वीं शतबाड़ी में पर्दा प्रथा का प्रसार सम्पूर्ण उत्तरी भारत में हो गया था।[52] मुस्लिम समाज में पर्दा प्रथा का पालन कठोरता से किया जाता था। पर्दा का पालन न करने वाली स्त्री समाज में निकृष्ट मानी जाती थी।[53] सन्त निज़ामुद्दीन औलिया स्त्रियों के स्वतन्त्रता के विरुद्ध थे, उनके अनुसार वह दिन कयामत का दिन होगा जब स्त्रियाँ घोड़े की सवारी करेंगी।[54] फिरोज शाह तुगलक ने स्त्रियों

की स्वतन्त्रता पर रोक लगा दी। मुस्लिम स्त्रियाँ जो प्रत्येक शुक्रवार को इबादत हेतु संतों के मकबरों पर जाया करती थी, को बंद करवा दिया। उसके अनुसार स्त्रियों द्वारा अपनाया गया मार्ग शरीयत के विरुद्ध था।[55] सिकन्दर लोदी ने भी पूर्ववर्ती सुल्तान के मार्ग का अनुसरण किया तथा स्त्री स्वतन्त्रता पर रोक लगा दिया था।[56] दिल्ली के सुल्तान पर्दे का समुचित पालन करवाते थे। इसके लिए 'हरम' की व्यवस्था किया था। हरम की देखरेख वृदधा स्त्रियाँ अथवा हिजड़े करते थे। दस वर्ष से ज्यादा के बच्चे भी हरम के अंदर प्रवेश नही कर सकते थे। हरम के अंदर कोई संदेश तीन मध्यस्थों द्वारा गंतव्य स्थान को पहुंचता था।[57] अमीर लोग अपनी स्त्रियों के लिए आवरण युक्त डोलियों का प्रयोग करते थे।[58]

मुसलमानों द्वारा इस प्रथा के पालन के प्रति कडा रुख अख़्तियार करने के कारण गैर-मुस्लिम स्त्रियाँ भी पर्दे का पालन करती थी। 15वीं शताब्दी में इस प्रथा का बंगाल, बिहार में भी अधिक हुआ।[59] इसका उल्लेख विद्यापति और मुहम्मद जायसी के काव्यों में भी मिलता है।[60] हिन्दू कुलीन वर्ग तो मुस्लिम अमीरों के तौर-तरीके अपना लिए तथा बतौर 'हरम' का पालन करने लगे थे।[61] धीरे-धीरे पर्दा प्रथा ने समाज में सम्मान का माप बन गया। हिन्दुओं ने स्त्रियों की पवित्रता की सुरक्षा के लिए उपयोगी समझकर पर्दा प्रथा अपना लिया था।[62]

तलाक- हिन्दू समाज में विवाह विच्छेद की संभावनाएँ अत्यंत क्षीण थीं। विवाह विच्छेद सामाजिक विधानों के विपरीत माना जाता था। पति का सन्यासी या नपुंसक होने की स्थिति में स्त्री को दूसरा विवाह करने की अनुमति हिन्दू समाज में थी। इसी प्रकार पत्नी के संतानहीन होने की स्थिति में पुरुष द्वारा दूसरा विवाह किया जाता था।[63] किन्तु मुस्लिम समाज में ऐसा कोई नियम नहीं था। यदि पति-पत्नी वैवाहिक संबंध के अंतर्गत जीवन निर्वाह नहीं कर सकते थे तो तलाक देने की छूट थी।[64] यद्यपि की पैगंबर साहब ने विवाह विच्छेद को अनुचित ठहराया है परंतु मुस्लिम समाज में तलाक की प्रथा प्रचलित थी।[65] पुरुष को स्त्रियों की अपेक्षा तलाक देने की अधिक स्वतन्त्रता थी।[66] तलाक की घोषणा तीन बार करनी पड़ती थी। पहली बार और दूसरी बार की घोषणा तक पति-पत्नी को एक साथ रहने की व्यवस्था थी किन्तु तीसरी और अंतिम बार तलाक की घोषणा हो जाने पर वह विवाह विच्छेद पूर्ण मान लिया जाता था।[67] तलाक में साक्ष्यों की उपस्थिति थी।[68] स्त्री को तलाक की अधिक स्वतन्त्रता नहीं थी। वह पति की सहमति से ही तलाक ले सकती थी।[69] यदि कोई

पति अपनी पत्नी को पुन: प्राप्त करना चाहता तो उसे तलाक दी हुई पत्नी के पुर्नविवाह तथा पिछले विच्छेद की इंतेजारी करनी पड़ती थी।[70] आलोच्य काल में तलाक प्रथा के प्रचलन का उल्लेख मिलता है।[71]

वेश्यावृत्ति- प्रारम्भ से ही प्राचीन भारतीय समाज में वेश्यावृत्ति का प्रचालन था।[72] आलोच्य काल में ऐसी स्त्रियों का घर सैनिकों का प्रिय स्थान होता था।[73] समाज में व्याप्त इस बुराई का विस्तृत उल्लेख विद्यापति के काव्य में मिलता है।[74] राज्य द्वारा इस कुरीति को रोकने का प्रयास नहीं किया गया बल्कि वृद्धि में प्रोत्साहन मिलता था। अलाउद्दीन खिलजी ने आर्थिक नियंत्रण को लागू करते समय, एक सैनिक के कहने पर जो स्वयं एक वेश्यावृत्ति था, वेश्याओं की कीमत भी निर्धारित कर दी। ये निर्धारित मूल्य से अधिक कीमत नहीं ले सकती थी।[75] अलाउद्दीन राज्य में इनकी संख्या अधिक हो जाने के कारण बहुतों को वैवाहिक बंधन में बँधवा दिया।[76] समाज में पर्दा की कठोरता ने इस प्रथा के प्रचलन में महत्वपूर्ण योगदान दिया।[77] समाज के लिए एक बुराई थीं इससे न केवल स्त्री जीवन कलंकित होता था, अपितु पुरुषों को चारित्रिक पतन हो जाता था।

स्त्री शिक्षा- प्राचीन काल में स्त्रियाँ शिक्षा के क्षेत्र में आगे थी।[78] सल्तनत काल में स्त्री शिक्षा का स्तर गिर गया था।[79] सुल्तानों ने स्त्री शिक्षा के प्रति कोई अभिरुचि न दिखाई। शासक तथा अमीर यदा-कदा अपनी कन्याओं की शिक्षा की व्यवस्था अलग से कर दिया करते थे। बेगम रज़िया फारसी और अरबी में पारंगत थी। उसे पूरा कुरान कंठस्थ था।[80] मिथिला की रानी लक्ष्मी देवी शिक्षा में अभिरुचि रखती थी।[81]

स्त्रियों की राजनीतिक भूमिका- स्त्रियाँ राजनीतिक क्षेत्र में शून्या न थी। प्राचीन काल से में ऐसे अनेक उदाहरण मिलते है। जिससे यह अनुमान लगे जा सकता है कि स्त्रियाँ पति के मृत्यु के उपरांत प्रशासनिक क्षेत्र में अहम भूमिका का निर्वाह करती थी।[82] तेरहवी शताब्दी में बेगम रज़िया सुल्तान बनना तथा राज्य का संचालन करना, स्त्रियों की राजनीतिक भूमिका स्पष्ट नमूना है। वह सत्ता को आने हाथ में केन्द्रित कर खुलेआम दरबार में बैठती थीं और शासनतंत्र को चलाती थीं।[83] सुल्तान फिरोज की पत्नी मलिके जहाँ के राजनीतिक हस्तक्षेप के कारण अलाउद्दीन को कड़ा में जाकर रहना पड़ा था।[84] मलिके जहाँ फिरोज शाह खिलजी की मृत्यु के पश्चात भी राज्य के कार्यों में हस्तक्षेप करती रही। उसने अपने पुत्र रुकुरु इब्राहिम

को गद्दी पर आसीन कराने में असफल प्रयास किया।[85] तुगलक शासन काल में स्त्रियों का प्रभुत्व था। सुल्तान मुहम्मद तुगलक की माता मखध्ये जहाँ का हरम की महिलाओं तथा कर्मचारियों पर प्रभुत्व था।[86] सुल्तान फिरोज तुगलक की बहन खुदावन्द जादा, मुहम्मद तुगलक की मृत्यु के पश्चात अपने पुत्र दावरबख्श को शासक बनाना चाहती थी। अत: उसने सुल्तान फिरोज तुगलक की हत्या का षड्यंत्र रचा परंतु सफल न हुई।[87] लोदी सुल्तानों की हरम की स्त्रियाँ तत्कालीन राजनीति में सक्रिय भाग लेती थी। इस संबंध में बहलोद लोदी के ज्येष्ठ पुत्र ख्वाजा वायजीद की बीवी मन्तू का नाम विशेष उल्लेखनीय है। जौनपुर के सुल्तान महमूद के आक्रमण के समय वह किले में घिरे। स्त्रियों के साथ पुरुष वेश पहनकर किले की रक्षा बहलोल लोदी की अनुपस्थिति में करती रही।[88] तारीखे-दाऊदी के लेखक अब्दुल्लाह के अनुसार सुल्तान शर्क़ी की पत्नी ने दिल्ली पर आक्रमण करने के लिए अपनी पति को प्रोत्साहित किया था।[89] इसी प्रकार बहलोल लोदी की बीवी अम्बा जो सिकंदर लोदी की माँ भी थी ने अफगान सरदारों के एक दल को जिसका नेता खोनखाना नुवानी थी, का सहयोग प्राप्त कर अपने पुत्र सिकंदर लोदी को गद्दी दिलाने का सफल प्रयास किया।[90] जौनपुर के शर्क़ी सुल्तान हुसैन शाह शर्क़ी की माता बीबी खुन्दा बहादुर एवं बुद्धिमान औरत थी। वह राज्य के महत्वपूर्ण प्रशासनिक कार्यों में भाग लेती थी।[91] बंगाल की स्त्रियाँ पुरुषों के साथ युद्ध में भाग लेती थी।[92] उपरोक्त नकारात्मक तत्वों के साथ ही तत्कालीन भारतीय समाज में स्त्रियों के कतिपय सम्मानित पक्ष भी है। हिन्दू नारी के मातृत्व, आदर्श की चरम परिणति मानी जाती है। माता के रूप में नारी साधारण स्तर से ऊंचा उठ जाती हैं उसका स्थान समाज में पूजनीय हो जाता है। मनु के हजारों पिता की तुलना में माता का स्थान ऊँचा बताया हैं।[93] हिन्दू समाज में माँ का स्थान सम्माननीय था। राजपूत अपनी माँ का अधिक सम्मान करते थे। वो अपनी माता को आदर्श सूचक शब्द 'माँ' जी से संबोधित करते थे।[94] ये लोग माता की आज्ञाओं का पालन धर्म की भांति करते थे।[95] किसी कार्य पर जाते समय हिन्दू अपनी माँ का चरण छूते थे।[96] मुस्लिम समाज में भी माता को अधिक सम्मान दिया जाता था।[97] मुहम्मद बिन तुगलक अपनी माता को बड़ा सम्मान करता था एवं उनके चरणों का चुंबन लिया करता था। उसका प्रभाव हरम पर अधिक था सभी लोग उनका सम्मान करते थे।[98]

संदर्भ-

- अल्टेकर,ए॰ एस॰ द पोजीशन ऑफ वुमेन इन हिन्दू सिविलाइजेशन, बनारस, 1956, पृष्ठ-1
- वासुदेव शरण अग्रवाल ओमेन इन ऋग्वेद इन ऋग्वेद, 1941, पृष्ठ डी॰ एन॰ मित्तल, द पोजीशन ऑफ ओमेन इन हिन्दू लॉ, कलकता, 1913, पृष्ठ- 600-01
- न गृहम गृहमित्याह गृहणी गृह मुच्चयेत॥ प्रभु, पृष्ठ- 249-66
- “यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते,रमते देवता॥” मनु स्मृति, उद्धृत,प्रभु पृष्ठ-261
- मज़मूदार आर॰सी॰ वैदिक एज, पृष्ठ- 512-13
- डी॰एन॰राय॰,द स्पिरिट ऑफ हिन्दू सिविलाइजेशन, कोलकाता, 1936, पृष्ठ-147
- बुहलर द लॉ ऑफ मनु, पृष्ठ 85, श्लोक 555758,ज॰ डि॰ ले॰ क॰, 1922,पृष्ठ 207
- आर॰सी॰ मज़मूदार,दत्ता एक चौधरी एन एडवांस हिस्ट्री ऑफ इंडिया, भाग-2, 1949, पृष्ठ-400
- अशरफ, के॰ एम॰: लाइफ एंड कंडीशन ऑफ पीपुल ऑफ हिंदुस्तान (हिन्दी), वैज्ञानिक एवं तकनीकी आयोग शिक्षा मंत्रालय द्वारा प्रकाशित, दिल्ली,1961, पृष्ठ-176
- अमीर खुसरो: खजाइनुल फ़ुतूह सम्पा सैय्यद मैनुल हक,सुल्तानियाँ हिस्टरोरिकल सोसाइटी, अलीगढ़, 1927
- दवेलरानी: खिज़्रखान सम्पा मौलाना रशीद अहमद,अलीगढ़ विश्वविद्यालय, प्रकाशन, अलीगढ़,1917
- अमीर खुसरों: सियारूल अजाम, उद्धत के॰ एस॰ लाल, ट्विलाइट ऑफ दिल्ली सल्तनत, पृष्ठ- 270 अशरफ पृष्ट-170
- टाड, जेम्स: एनल्स एंड एन्टीक्यूटीज़ ऑफ राजस्थान,भाग-1-3,सम्पा,क्रुक, संसोधित संस्करण,1960, पृष्ठ 639
- अल्टेकर, ए॰ एस॰: द पोजीशन ऑफ वोमेन इन हिन्दू सिविलाइजेशन, बनारस, 1958 पृष्ठ 9
- अल्टेकर, पृष्ट 8, कुक्र पापुलर रिलीजन अँड फोकलोर ऑफ नार्दन इंडिया, भाग

AD EDUXIAN JOURNAL
(A Quarterly Multidisciplinary Blind Peer Reviewed & Refereed International Journal)
www.educarepublication.com
E-ISSN: 3048-9751
Volume-1, Issue-2, October 2024

- 2 पृष्ठ 194
- टाड, जेम्स, भाग 2, पृष्ठ 739-40
- वही,
- टी॰सी॰ दास गुप्ता एस्पेक्टस ऑफ बंगाली सोसाइटी फ्राम ओल्ड बंगाली लिटरेचर,कलकत्ता, 1935,पृष्ठ 178
- अल्टेकर, ए॰ एस॰ पृष्ठ 59-60
- वही, पृष्ठ 61,मोहम्म्द जायसी, पृष्ठ 83
- अमीर खुसरो देवल रानी खिज़्रखा, पृष्ठ,92
- मुस्लिम परिवार में बाल विवाह के प्राचीन परंपरा के लिए देखिये हुअर्ट,पृष्ठ 161, समकालीन विवरण हेतु देखिये आफिक, पृष्ठ 180
- जायसी, मालिक मुहम्मदः पद्मावत, सम्पा रामचन्द्र शुक्ल नागरी प्रचारिणी, काशी, सम्व 2022 तथा सहित सम्पा॰ वासुदेव शरण अग्रवाल, प्रथम संस्करण
- अल्टेकर, ए॰ एस॰ पृष्ठ 70-71
- टाड,जेम्स, भाग-2 पृष्ठ 739
- ज॰ दि॰ ले॰ के॰ 1922, पृष्ठ 207
- अल्टेकर, ए॰ एस॰ पृष्ठ 71
- टाड, भाग 1, 350
- पी॰एन॰ चोपड़ा,सोसाइटी एंड कल्चर ड्यूरिंग मुगल एज॰ पृष्ठ 114
- मुहम्मद यासीन, पृष्ठ 124
- बरनी,पृष्ठ 140,याहिया बिन अहमद, पृष्ठ 86
- ईश्वरी प्रसाद, मध्यकालीन भारत, पृष्ठ 506
- अमीर खुसरो, देवल रानी खिज़्रखान,पृष्ठ 80
- अल्टेकर, ए॰एस॰ पृष्ठ 115
- ई॰ थांपसन, सती,लंदन, 1928, प्रस्तावना, पृष्ठ 19
- मेकालिफ़, भाग-1, पृष्ठ 381, अहमद शाह, पृष्ठ 130
- सैय्यद अतहर अब्बास रिजवी :तुगलक कालीन भारत, भाग-2 अलीगढ़, 1956,

AD EDUXIAN JOURNAL
(A Quarterly Multidisciplinary Blind Peer Reviewed & Refereed International Journal)
www.educarepublication.com
E-ISSN: 3048-9751
Volume-1, Issue-2, October 2024

- पृष्ठ 171-72 इकतदार हुसैन सिद्दीकी तथा काजी अहमद, पृष्ठ73-74, सर
- हैमिलन गिब, ट्रेवेल्स ऑफ इब्नबतूता, भाग-3 कैम्ब्रिज, 1971, पृष्ठ 137-40
- अशरफ, के॰ एम॰ पृष्ठ 112, थाम्पसन,पृष्ठ 15
- शरीफ, पृष्ठ 361
- इब्नबतूता, पृष्ठ 137,रिजवी, तुगलक काल भाग-1, पृष्ठ 117
- डुबायस,पृष्ठ 352
- गिब, पृष्ठ 352
- जौहर शब्द की उत्पत्ति के लिए-अशरफ, पृष्ठ 117
- कुरूक, थिंग्स इंडियन, पृष्ठ 198, के॰ एस॰ लाल, खिलजीवंश का इतिहास, पृष्ठ 81
- बाबर,पृष्ठ 596
- शरफुद्दीन अली यजदी, जफरनामा, भाग 2, सम्पा के॰ एस॰ लाल, टिवलाइट ऑफ देहली सल्तनत, पृष्ठ 269
- टाड, जेम्स, पृष्ठ 143
- अल्टेकर, ए॰एस॰ पृष्ठ 175, कुमारी थापर, हरम द पर्दा, उद्धृत अशरफ, पृष्ठ 176
- जफर, पृष्ठ 220
- जहां मुसलमानों का प्रभाव नहीं था वहाँ स्त्रियाँ पर्दे का पालन नहीं करती थी। गौरी शंकर ओझा, मध्यकालीन, भारतीय संस्कृति, पृष्ठ 54, जवाहर लाल नेहरू, डिस्कवरी ऑफ इंडिया, दिल्ली, 1961,पृष्ठ 242
- अशरफ के॰ एम॰ 177
- अल्टेकर, ए॰ एस॰, पृष्ठ 177
- पी॰ थामस, ओमन थ्रु द एजेज़ मुंबई, 1964, पृष्ठ 240
- के॰ एस॰ लाल, टिवलाइट ऑफ दिल्ली सल्तनत, पृष्ठ 270
- फिरोज तुगलक: फ़ुतुहाते फिरोजशाही, सम्पा॰ शेख अबदूर रशीद अलीगढ़, पृष्ट 10
- निज़ामुद्दीन अहमद, पृष्ठ 336, थामस, ओमन थ्रो द एजेज़, पृष्ठ 250
- ज॰ रा॰ ए॰ सी॰ 1935, पृष्ठ 246, अब्दुल रज़्जाक, पृष्ठ 32

- शम्स सिराज अफीम: तारीखें-फिरोजशाही, सम्पा॰ मौलाना विलायत हुसैन विविल, इंडियन कलकत्ता, 1890, तैमूरलेन, मलफूजाते- तैमूरी, एलियट एंड डाउसन, भाग-3, पृष्ठ 318
- आफिक, पृष्ठ 118
- के॰एस॰ लाल, टिवलाइट ऑफ देलही, सल्तनत, पृष्ठ 270, थामस, ओमेन थ्रु द एजेज़, पृष्ठ 240
- अशरफ के॰ एम॰ पृष्ठ 177, अल्टेकर, पृष्ठ 176
- डी॰एन॰ मित्तल, पृष्ठ 163-64
- ई॰ रि॰ इ॰ भाग-8, पृष्ठ 453, प्रभु, पृष्ठ 191
- मौलाना मुहम्मद अली, पृष्ठ 270-71, लेगी पृष्ठ 115, अशरफ, पृष्ठ 171
- मुहम्मद साहब ने उन पत्नियों की निंदा की है हैं जिन्होंने बार-बार तलाक लिए। मुहम्मद मजहरुद्दीन सिद्दीकी, ओमेन इन इस्लाम, लाहौर, 1959, पृष्ठ 74
- इस्लाम में स्त्रियाँ पति की धन समझी जाती थीं। लेवी, पृष्ठ 95
- क्रूक, इस्लाम इन इंडिया, पृष्ठ 86
- वही, मौलाना मुहम्मद अली, पृष्ठ 685
- मुहम्मद मजरूद्दीन सिद्दीकी, पृष्ठ 76, क्रूक, इस्लाम इन इंडिया, पृष्ठ 86
- ईश्वरी प्रसाद, मध्ययुगीन भारत, पृष्ठ 506
- सर चार्ल्स इलियट, ओमेन इन बुद्धिस्ट लिटरेचर, पृष्ठ 23, वाशम, पृष्ठ 185
- अमीर खुसरो, इजाजे खुशखी, उद्धृत अशरफ, पृष्ठ 274
- विद्यापति, कीर्तिलता, सम्पा॰ शिव प्रताप सिंह, पृष्ठ 220
- मुहम्मद कासिम फरिश्ता, तारीखे फरिश्ते, उद्धृत, अशरफ के॰ एम॰ पृष्ठ 274
- अमीर खुसरो, खजाइनुल फुकूह, पृष्ठ 18, थामस, ओमेन, थ्रो द एजेज़, पृष्ठ 251
- वहीं
- ऋग्वेद की दो स्त्रोतों की रचना करने वाली नारी घोष थीं। इसी प्रकार अपला, सारस्वती भी दार्शनिक थीं। प्रभु, पृष्ठ 266, सुलभा गार्गी दर्शन के क्षेत्र में अद्वितीय थी। माधवानन्द एंड मजूमदार, द ग्रेट ओमेन ऑफ इंडिया, अल्मोड़ा, 1953, पृष्ठ 30

AD EDUXIAN JOURNAL
(A Quarterly Multidisciplinary Blind Peer Reviewed & Refereed International Journal)
www.educarepublication.com
E-ISSN: 3048-9751
Volume-1, Issue-2, October 2024

- अल्टेकर, ए॰ एस॰ पृष्ठ 23
- माधवानन्द एंड मज़मूदार, द ग्रेट ओमेन ऑफ इंडिया, कलकत्ता 1953, पृष्ठ 381
- ज॰ ए॰ सो॰ व॰ पृष्ठ 441
- हर्ष वर्धन की बहन राजश्री के राजकीय कार्यों हेतु देखिये-वाशम, पृष्ठ 94, कश्मीर में बीबीव दीदा के प्रभुत्व काल हेतु देखिये- माधवानन्द एंड, पृष्ठ 288-89
- माधवानन्द एंड मज़मूदार, पृष्ठ 367
- जियाउद्दीन बरनी: तारीखे-फिरोजशाही, सम्पा॰ सैय्यद अहमद खान, एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल, प्रकाशक विविल॰ इंडियन, कलकत्ता, 1931, पृष्ठ 221-22
- बरनी, पृष्ठ 238
- इब्नवतुता, पृष्ठ 376, रिजवी, तु॰ का॰ भा॰, भाग-1, पृष्ठ 234
- आफिक, पृष्ठ 44-45
- अब्दुल्लाह, तारीखे-दाऊदी, सम्पा॰ अबदूर रशील, अलीगढ़, 1954, पृष्ठ 17, के॰ एस॰ लाल, टिवलाइट ऑफ देलही सल्तनत, पृष्ठ 270
- वही, पृष्ठ 12, नियामतउल्लाह, मजखाने अफगाना, उद्धृत, रखा मिश्रा, पृष्ठ 10-11
- अब्दुल्लाह, पृष्ठ 17, नियामतउल्लाह, मजखाने अफगाना, उद्धृत, रेखा मिश्रा, पृष्ठ 10-11
- रिजकुल्लाह मुश्ताकी, पृष्ठ 11, पृष्ठ, रिजवी तु.का.भा॰, भाग-1, पृष्ठ 99, के.एस॰, टिवलाइट ऑफ देलही सल्तनत, पृष्ठ 270
- टी॰सी॰,दासगुप्ता, पृष्ठ 8
- प्रभु, पृष्ठ 254, अल्टेकर, पृष्ठ 101
- अशरफखाँ पृष्ठ 157
- आल्हा व उदल माता देवल देवी की आज्ञाओं का पालन किए तथा चित्तौड़ की तरफ से लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त किए। टांड़, भाग-2, पृष्ठ 485-8
- यदुनाथ सरकार, चैतन्याज पिलग्रीमेजेज़ एंड टीचिंग, पृष्ठ 9
- अशरफ, पृष्ठ 157
- इब्नवतुता, पृष्ठ 376, रिजवी, तु॰ का॰ भा, भाग-1, पृष्ठ 234